July - September, 2014 www.nbjk.org जुलाई - सितम्बर, 2014

Mental Health and Development Model: An Impetus to Enable PWMIE

The Point

The World Health Organization estimates that more than 450 million people across the globe suffer from mental illness. In India, over 125 million people bear the same burden including 10 million epileptic patients and most of the PWMIE (people with mental illness & epilepsy) have no access to proper treatment. There are merely around 4,500 psychiatrists in India and they can be counted on fingers in the states like Jharkhand and Bihar. Invisibility of such illness hinders rest of the people to understand its impact over the affected one and his or her family members.

NBJK follows the WHO preamble which comprises the state of mental well-being with equal importance as of physical and social well-beings of an individual with health. In June 2002, Community Mental Health program was launched by NBJK in Jharkhand and Bihar under partnership of 24 NGOs with support of BasicNeeds (India), Bangalore. This was a maiden hand holding initiative before the community which ensured mainstreaming of PWMIE through identification, treatment, rehabilitation, research and advocacy. There were 11 partner organizations including NBJK in Hazaribag, Ranchi, Saraikela-Kharsawan, Koderma, Lohardaga, Garhwa, Palamu, Godda and Dumka districts of Jharkhand. While 14 organizations have served in Nalanda, Nawada, Gaya, Patna, Bhojpur, Jamui and Muzaffarpur districts of Bihar. RINPAS (Ranchi) has provided training to NGO staffs to identify and deal with PWMIE in field, supported for treatment and started outreach camps at Hazaribag and Saraikela-Kharsawan. The program has covered 2714 villages, 35 blocks and 16 districts in both the states cumulatively. Till the year 2008, this could serve more than 4500 PWMIE and ensured rehabilitation to around 1100 patients with livelihood/productive activities after their stabilization or complete relief. For the first time in their lives, mentally ill people were consulted and given space to voice their fears and needs. From July'10, the program was rejuvenated with slight changes and titled as Mental Health & Development program with a target to reach 7500 PWMIE till June'14 in almost same operational areas.

Its execution has reduced the stigma, myths or misconceptions surrounding mental illness and sensitized people towards discrimination and human rights violation experienced by the PWMIE. It motivated them to get treatment under DMHP (district mental health program) in 4 districts of Jharkhand and arranged private psychiatrists to hold monthly mental health camps at Gaya, Patna and Muzaffarpur in Bihar. The program has ensured nearly free and regular treatment with medicines for around 3000 PWMIE of both the states through camps supported by RINPAS in Jharkhand. It developed a network for survey, identification, treatment, rehabilitation and advocacy in rural areas, particularly in Bihar where people are suffering a lot due to lack of mental health care services. A recent delegation led by Mr. Girija Satish (ED, NBJK) on 7 August has suggested the chief minister of Bihar to take suitable action. The program has linked PWMIE and their caretakers under SHGs or local federations to involve them with IGAs with advocacy for their cause. There are 6293 members in SHGs or federations they formed. In August'14, a national federation of PWMIE was formed and seminars were organized to assess the impact of this model in Jharkhand and Bihar. In the seminar held on 19 August at Ranchi, Mrs. Reema Ghosh (BasicNeeds) has referred to the study (2012-14) that shows significant rise for patients under treatment (86%), their association with IGAs (22%) and SHGs or federations (20%). During last four years, the program has catered 6652 PWMIE, out of them 5503 are in far better condition and 3825 are involved with productive works or IGAs. NBJK seeks support to continue mental health & development model at large scale as its worth is already proved to satisfy the basic needs and rights of mentally ill people.

मानसिक रोग और विकास मॉडल : मानसिक रोगी सशक्तिकरण का एक प्रभावी तरीका

विश्व स्वास्थ्य संगठन का अनुमान है कि दुनिया में 45 करोड़ से अधिक लोग मानसिक रोगों से जूझ रहे हैं। भारत में लगभग 1 करोड़ मिर्गी रोगियों सहित 12 करोड़ से ज्यादा लोग ऐसी ही समस्या से ग्रस्त हैं। मानसिक रोग और मिर्गी के शिकार अधिकांश लोगों के लिए उचित चिकित्सा सुविधा उपलब्ध नहीं है। पूरे भारत में प्रशिक्षित मनश्चिकित्सकों की कुल संख्या 4500 के आसपास है और बिहार–झारखंड जैसे राज्यों में तो उन्हें महज उंगलियों पर गिना जा सकता है। मनोरोगों की अदृश्यता के कारण रोगी या उसके परिवार पर पड़ रहे उनके प्रभाव का आकलन करने में बाकी लोग समर्थ भी नहीं हैं।

न०भा०जा० केन्द्र स्वास्थ्य को संपूर्णता में देखे जाने सम्बन्धी विश्व स्वास्थ्य संगठन की प्रस्तावना से सहमत है, जिसमें किसी स्वस्थ व्यक्ति के लिए उसकी शारीरिक और सामाजिक तंदरूस्ती के साथ–साथ मानसिक स्वास्थ्य को भी बराबर का दर्जा मिला है। जून 2002 में न० भा० जा० केन्द्र द्वारा बेसिकनीड्स (इंडिया), बंगलोर के सहयोग से झारखंड और बिहार में 24 संस्थाओं की साझेदारी से सामुदायिक मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम की शुरूआत हुई थी। यह समुदाय के बीच एक अनोखी पहल थी, जिसमें मानसिक–मिर्गी रोगियों को पहचान, इलाज, पुनर्वास, शोध और जनपैरोकारी के माध्यम से मुख्य धारा में आने का प्रयास किया गया। इसके तहत झारखंड के हजारीबाग, राँची, सरायकेला–खरसाँवा, कोडरमा, लोहरदगा, गढ़वा, पलामू, गोड्डा और दुमका जिलों में न०भा०जा० केन्द्र सहित 11 साझेदार संस्थाएँ थी, जबकि बिहार के नालंदा, नवादा, गया, पटना, भोजपुर, जमुई और मुजफ्फरपुर जिलों में 14 सहयोगी संस्थाओं के माध्यम से इस कार्यक्रम को क्रियान्वित किया गया। रिनपास (राँची) ने इसके लिए सभी संस्थाओं के चयनित कार्यकर्तागण को मानसिक रोगियों की पहचान और सामुदायिक संपर्क हेतु आवश्यक प्रशिक्षण दिया और चिह्नित रोगियों के इलाज में सहयोग किया और उसके द्वारा हजारीबाग के साथ सरायकेला–खरसँवा में मानसिक स्वास्थ्य शिविरों की शुरूआत हुई। इस कार्यक्रम ने दोनों राज्यों के 16 जिलों में 35 प्रखंडों के 2714 गाँवों तक अपनी पहुँच बनायी। वर्ष 2008 तक इसके तहत 4500 से अधिक मानसिक रोगियों को लगातार इलाज की सुविधा उपलब्ध हुई, जिनमें लगभग 1100 रोगियों को स्थिरीकरण या बीमारी समाप्ति के बाद आजीविका/उत्पादक कार्यों से जोड़ कर पुनर्वासित किया गया। पहली बार मानसिक–मिर्गी रोगियों के लिए खास तौर बने इस समुदाय आधारित कार्यक्रम के माध्यम से इतनी बड़ी संख्या में मनोरोगियों से संपर्क किया गया और उन्हें अपने भय या जरूरतों के बारे में कुछ बताने का मौका मिला। जुलाई 10 से इस कार्यक्रम को मामूली परिवर्तनों के साथ फिर शुरू किया गया। ''मानसिक स्वास्थ्य और विकास'' नाम से प्रारंभ इस कार्यक्रम द्वारा जून 14 तक लगभग पूर्व के कार्यक्षेत्रों में ही 7,500 मानसिक–मिर्गी रोगियों तक पहुँचने का लक्ष्य था।

न० भा० जा० केन्द्र द्वारा एक छोटे अंतराल को छोड़ कर लगभग एक दशक तक क्रियान्वित मानसिक स्वास्थ्य सम्बन्धी कार्यक्रम ने मानसिक बीमारियों से जुड़ी कल्पना, भ्रान्ति, कलंक और अंधविश्वास को जनमानस से दूर करने का महत्वपूर्ण काम किया है। गहरे भेदभाव के शिकार और मानवाधिकारों से वंचित मानसिक रोगियों के प्रति समाज को संवेदनशील बनाने में इसकी सहभागिता बेशकीमती है। इसने झारखंड के 4 जिलों में राज्य सरकार द्वारा शुरू किये गए जिला मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम का लाभ उठाने के लिए रोगियों और उनके परिजनों को प्रोत्साहित किया और बिहार के पटना, गया और मुजफ्फरपुर में गैरसरकारी मनश्चिकित्सकों की सहायता से जरूरतमंद रोगियों के लिए मानसिक स्वास्थ्य शिविरों के आयोजन का प्रबंध किया। झारखंड में रिनपास के सहयोग से आयोजित शिविरों को जोड़ें तो दोनों राज्यों में इस कार्यक्रम अन्तर्गत प्रति माह आयोजित 5 मानसिक स्वास्थ्य शिविरों में लगभग 3000 मनोरोगियों को चिकित्सीय परामर्श और मुफ्त दवा की सुविधा उपलब्ध हुई है। मानसिक स्वास्थ्य और विकास मॉडल ने बिहार–झारखंड के अपने कार्य क्षेत्रों में खासकर बिहार में मानसिक रोगियों की पहचान हेतु सर्वेक्षण, इलाज, पुनर्वास और जनपैरोकारी का एक तंत्र विकसित कर दिया। क्योंकि बिहार में मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं का घोर अभाव है। 07 अगस्त 14 को श्री गिरिजा सतीश (अध्यक्ष, ना० भा० जा० केन्द्र) के नेतृत्व में बिहार के मुख्यमंत्री से मिले एक प्रतिनिधिमंडल ने उनसे आवश्यक कदम उठाने का आग्रह किया था। इस मॉडल में मानसिक–मिर्गी रोगियों एवं उनकी देखभाल करने वाले परिजनों को आयसृजक गतिविधियों के साथ–साथ अपनी बात रखने के लिए स्वमदद समूहों/फेडरेशनों के जरिये जोड़ा गया है। इन फेडरेशनों की सदस्य संख्या 6293 है। अगस्त 14 में मानसिक रोगियों के राष्ट्रीय संघ का गठन किया गया और बिहार–झारखंड में मानसिक स्वास्थ्य एवं विकास मॉडल क्रियान्वयन के प्रभाव पर सेमिनारों का आयोजन हुआ। 19 अगस्त 14 को राँची में आयोजित सेमिनार में श्रीमती रीमा घोष (बेसिकनीड्स) ने 2012–14 के दौरान हुए अन्तर्राष्ट्रीय अध्ययन के हवाले से कहा कि इस मॉडल से इलाज के लिए आने वाले मनोरोगियों की संख्या में 86%, आयसृजक गतिविधियों से उनके जुड़ाव में 22% और उनके द्वारा गठित स्वमदद समूहों/फेडरेशनों की सदस्यता में 20% की वृद्धि हुई। पिछले 4 वर्षों में मानसिक स्वास्थ्य एवं विकास मॉडल आधारित कार्यक्रम द्वारा 6652 मानसिक रोगियों को समुचित इलाज की सुविधा उपलब्ध करायी गई, जिनमें 5503 की स्थिति में काफी सुधार हुआ है और 3825 रोगी उत्पादक या आयसृजक गतिविधियों से जुड़े हैं। मानसिक रोगियों की बुनियादी जरूरतों की पूर्ति और उनके मौलिक अधिकारों की सुरक्षा में मददगार इस कार्यक्रम को बड़े पैमाने पर चलाने के लिए सहयोग चाहिए।

Media Interaction & Exposure for Child Reporters

A media interaction program was held on 16 September at Ranchi under UNICEF supported Child Reporters Program by NBJK. 29 CRs (child reporters) from 5 blocks of Ranchi district and 30 children from Delhi Public School were participants in the event attended by media persons. All were greeted by Ms Varuna Datta (Field Coordinator, UNICEF) and Ms Moyera Dawa (Communication Officer, UNICEF) has remembered 25th anniversary of child rights convention on the day. Mr. Job Zachariah (Head, UNICEF-Jharkhand) has explained the program as an effort to promote child rights as per mandate of UNCRC. Mr. Meghnath (Film Maker) has talked about the hidden message by visual media and shown some of his films on themes like team work, time management and conviction. Mr. Ram Singh (Principal, DPS) has appreciated village children for their potential while Mr. Vinay Bhushan (Asst. Editor, Prabhat Khabar) has stressed over child friendly news on different media tools and asked for suggestions. Ms R. J. Shanky (Radio Mantra) advised the children to be good observer and recorded them for her channel. A convention of CRs from 10 schools was inaugurated by Mr. Mehboob Alam (DSE) at Giridih on 30 August. In July, CRs have visited government officials and PRI representatives in Simdega, West Singhbhum and Ranchi districts with a lot of queries about problems to get book/ scholarship/ bicycle in time and shortage of teachers/ classroom/ playground/ drinking water/toilet/electricity in their schools. They have questioned about child labour, child marriage, gender discrimination, health and environment. The CRs from 10 schools in West Singhbhum district were introduced to group discussion, case studies and wall newspapers on different topics during the training at Chaibasa while an inter-school exposure visit was organized for CRs of Namkum block (Ranchi) also.

बाल पत्रकारों के लिए मीडिया संवाद और परिभ्रमण

यूनीसेफ के सहयोग से ना०भा०जा० केन्द्र द्वारा संचालित बाल पत्रकार कार्यक्रम अर्न्तगत 16 सितम्बर को राँची में बच्चों के लिए मीडिया संवाद का आयोजन हुआ। राँची जिला के 5 प्रखंडों से आए 29 बाल पत्रकार और देलही पब्लिक स्कूल के 30 बच्चे इस आयोजन में मीडियाकर्मियों से रूबरू हुए। इस सबों का स्वागत सुश्री वरूणा दत्ता (क्षेत्रीय समन्वयक, यूनीसेफ) ने किया और सुश्री मायरा दावा (सूचना पदाधिकारी, यूनीसेफ) ने अर्न्तराष्ट्रीय बाल अधिकार सम्मेलन की 25वीं वर्षगांठ के मौके पर आयोजित इस कार्यक्रम को महत्वपूर्ण बताया। श्री जॉब जकारिया (प्रमुख–यूनीसेफ, झारखण्ड) ने संयुक्त राष्ट्रसंघ द्वारा अनुमोदित बाल अधिकारों की चर्चा करते हुए कहा कि ऐसे आयोजनों से इनकी स्वीकर्यता बढ़ती है। श्री मेघनाथ (फिल्मकार) ने दृश्य माध्यमों के जरिये संवाद पर बच्चों का ध्यान आकृष्ट करते हुए उन्हें एकता समय प्रबंधन और दृढ़ विश्वास जैसे संदेश से युक्त कुछ फिल्में दिखलायी, श्री राम सिंह (प्राचार्य, डी०पी०एस०) ने ग्रामीण बच्चों में छिपी प्रतिभा को सराहा जबकि श्री विनयभूषण (सहा. सम्पादक, प्रभात खबरा) ने विभिन्न माध्यमों में बाल हितैषी समाचारों की मौजूदगी पर बल देते हुए सम्बन्धित सुझाव माँगा।

सुश्री आर० जी० शैंकी (रेडियो मंत्रा) ने बच्चों को निरीक्षण क्षमता बढ़ाने की सलाह देते हुए उनकी रिकार्डिंग की। 30 अगस्त को गिरिडीह में जिला के 10 विद्यालयों से आए बाल पत्रकारों का सम्मेलन हुआ, जिसका उद्घाटन श्री महबूब अली (जिला शिक्षा अधीक्षक, गिरिडीह) ने किया। जुलाई में सिमडेगा, प०सिंहभुम और राँची जिलों के बाल पत्रकारों ने सरकारी पदाधिकारियों और पंचायती राज प्रतिनिधियों से मिलकर उनसे अपनी समस्याओं जैसे समय पर किताब/छात्रवृत्ति/साइकिल की अनुपलब्धता और स्कूलों में शिक्षक/कक्षा/मैदान/पेयजल/शौचालय/बिजली के अभाव पर ध्यान आकृष्ट किया। बच्चों ने उन्हें बालश्रम, बाल विवाह, लिंग भेद, स्वास्थ्य और पर्यावरण जैसे मुद्दों पर भी घेरा। पश्चिम सिंहभूम जिला में 10 विद्यालयों के बाल पत्रकारों को चाइबासा में आयोजित प्रशिक्षण के दौरान मुद्दा आधारित समूह चर्चा, केस स्टडी रचना और दीवाल अखबार निकालने से परिचित कराया गया, जबकि नामकुम प्रखंड (राँची) के बाल पत्रकारों को अन्तरविद्यालयीय परिभ्रमण पर ले जाया गया।

Visitors at NBJK - Khunti

On 12 September, Dr. Maan Singh (Deptt. of Agriculture, Jharkhand Government) has visited at Laterdih, Jamuntiri and Maranghatu villages in Khunti district, the operational area of NBJK to explore agriculture based support for farmers. He assured for promotion of farm activities among tribal population to ensure food security. On 19 September, the members of SRT Trust Board had an interaction with villagers at Bhurso village. They came here to see the program of "Ensuring Food Security and Livelihood" by NBJK with support of Sir Ratan Tata Trust, Mumbai. The team has provided important feedback to tune up the program. On 26 September, Mr. Yogesh Kumar (CRURRS) and Mr. Mayank Sharma (IRRI) have visited Bhurso and Kudahaatu villages of Digri panchayat in Murhu block, Khunti district. They had an interaction with the growers of Sahabhagi variety of paddy seed. Both of the experts have discussed upon seed treatment, transplantation, weeding, rouging, use of fertilizers, yield collection method and seed storage. The farmers were provided seed storage bags also. They checked condition of the crop and replied for queries from the beneficiaries. This was a cluster demonstration visit under National Food Security Mission. In last week of July, an awareness program for farmers of Digri panchayat was organized by District Agriculture Department. The people have been provided black gram seeds and Mr. Amresh Kumar (Agronomist) with Mr. Raibahadur Manjhi (NFSM) have focused upon further support to SHG members.

नव भारत जागृति केन्द्र - खूँटी से

12 सितंबर को डा० मान सिंह (कृषि विभाग, झारखंड सरकार) ने खूंटी जिला में ना०भा०जा० केन्द्र के कार्यक्षेत्र लाटरडीह, जामुनटिरी और मारंगहातू गाँवों का दौरा कर किसानों द्वारा की जा रही खेती का जायजा लिया। स्थानीय कृषि में सरकार द्वारा बेहतर सहयोग की संभावनाओं का आकलन करने आए डा० सिंह ने खाद्य सुरक्षा के लिए खेती को प्रोत्साइन दिये जाने के प्रति आश्वस्त किया। 19 सितम्बर को सर रतन टाटा ट्रस्ट बोर्ड के सदस्यों ने भुरसो गाँव जाकर ग्रामीणों से बातचीत किया। ये लोग एस.आर.टी.टी. के सहयोग से न० भा० जा० केन्द्र द्वारा संचालित खाद्य सुरक्षा एवं आजीविका सम्बन्धी परियोजना के सम्बन्ध में आए थे। इन्होंने कार्यक्रम की बेहतरी हेतु महत्वपूर्ण सुझाव दिया।

26 सितंबर को श्री योगेश कुमार (सी.आर.यू.आर.आर.एस.) और श्री मयंक शर्मा (आइ.आर.आर.आइ. हजारीबाग) ने मुरहू प्रखंड के कुदाहातू और भुरसों गाँव जाकर ''सहभागी'' किस्म की धान बोने वाले किसानों से भेंट किया। दोनों विशेषज्ञों ने उनसे बीज उपचार, रोपनी, निराइ, उर्वरक इस्तेमाल, फसल संग्रह के तरीकों और बीज संरक्षण पर चर्चा किया। सुरक्षित तरीके से बीज रखने के लिए किसानों को बैग भी दिया गया। कृषि विशेषज्ञों ने किसानों के खेत पर जाकर उनकी फसल देखी और शंका समाधान किया। राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन के तहत यह एक समूह प्रदर्शन मुआयना था। जुलाई के अंतिम सप्ताह में दिगरी पंचायत के किसानों के लिए जिला कृषि विभाग द्वारा एक जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें किसानों से परिचर्चा करके उन्हें उड़द के बीज उपलब्ध कराये गए और श्री अमरेश कुमार (कृषि विशेषज्ञ) के साथ श्री रायबहादुर मांझी (रा०खा०सु०मि०) ने खेती के लिए स्वमदद समूहों को बेहतर सहयोग पर किसानों से परिचर्चा किया।

Opportunities and Challenges for VOs :– A Workshop

Voluntary organizations are facilitators of our social cause and they play important role in advocacy for crucial issues, Mr. Girija Satish (ED, NBJK) has said during the workshop organized by VANI (Voluntary Action Network India), Delhi on 15 July at Ranchi. He opined that VOs have realized the concept of self help groups for women empowerment despite limitations and they must be entrusted by the government for scheme implementation. He appealed for self-reliance, improved strategy and a team initiative to reduce internal differences. With a brief introduction upon the changing scenario for voluntary sector, Mr. Harsh Jaitley (CEO, VANI) has called for a combined initiative to work smoothly in light of the amendments in Foreign Contribution Regulation Act, 1976 and implications of other revised laws for the sector. He mentioned that around 40,000 VOs are registered under FCRA and 50% of them file returns. Mr. Ghanshyam (Judao) has differentiated the terms voluntary with non-governmental. He asked for the understanding behind emergence of voluntary activities and their relevance. Mr. Ashok Bhai (Sahbhagi Shikshan Kendra, Lucknow) has insisted for classification of NGOs as per their nature of works as many NGOs like BCCI (Board of Control for Cricket in India) has different motif. He said that all NGOs or VOs should not come under the ambit of same laws. Also Mr. Narendra (Associate, VANI), Mr. A. K. Singh (LEAD) and Mr. Arvind Kumar (Lok Jagriti Kendra) have expressed their views in this workshop. The program was attended by 100 VOs of VANI network from all the districts of Jharkhand.

स्वैच्छिक संस्थाओं के लिए अवसर और चुनौतियाँः एक कार्यशाला

स्वैच्छिक संगठन और संस्थाएँ हमारे सामाजिक सरोकारों को बढ़ावा देती हैं और कठिन मुद्दों पर इनकी जनवकालत वाली भूमिका महत्वपूर्ण है, श्री गिरिजा सतीश (अध्यक्ष, न० भा० जा० केन्द्र) ने 15 जुलाई को राँची में वाणी (वालंटरी एक्शन नेटवर्क इंडिया), नई दिल्ली द्वारा आयोजित सेमिनार को सम्बोधित करते हुए कहा। इन्होंने सरकारी कल्याण योजनाओं के क्रियान्वयन में संस्थाओं की भूमिका पर चर्चा के दौरान महिला सशक्तिकरण के संदर्भ में स्वमदद समूह की अवधारणा को मूर्त रूप देने में अनेक सीमाओं के बावजूद स्वैच्छिक क्षेत्र के अवदान को सराहनीय बताया और आपसी मतभेदों को भूल कर एक बेहतर कार्यप्रणाली के जरिये आत्मनिर्भरता बढ़ाने की अपील संस्थाओं से किया। श्री हर्ष जेतली (मुख्य कार्यकारी, वाणी) ने स्वयंसेवी संस्थाओं के लिए बदलते परिदृश्य का परिचय देते हुए एफ सी आर ए 1976 तथा अन्य कानूनों में आए बदलाव के मद्देनजर सुव्यवस्थित तरीके से काम करने के लिए एक सामूहिक पहल को जरूरी बताया। उन्होंने कहा कि लगभग 40,000 संस्थाएँ एफ.सी.आर.ए के तहत निबंधित हैं और उनमें 50% नियमित रूप से रिटर्न जमा करती हैं। श्री घनश्याम (जुड़ाव) ने स्वैच्छिक, अ–सरकारी और गैरसरकारी शब्दों के बीच अंतर स्पष्ट करते हुए स्वैच्छिक गतिविधियों की पृष्ठभूमि और प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला। श्री अशोक भाई (सहभागी शिक्षण केन्द्र, लखनऊ) ने गैरसरकारी संस्थाओं द्वारा किये जा रहे कार्यों के आधार पर उन्हें वर्गीकृत करने की सलाह दिया, क्योंकि अनेक संस्थाओं जैसे बी.सी.सी.आइ (बोर्ड ऑफ कंट्रोल फॉर क्रिकेट इन इंडिया) का उद्देश्य अलग है। इन्होंने कहा कि सभी गैरसरकारी/स्वैच्छिक संस्थाओं के लिए एक जैसे कानून नहीं होने चाहिए। कार्यशाला में सर्वश्री नरेन्द्र (एसोशियेट, वाणी), ए० के० सिंह (लीड) अरविन्द कुमार (लोक जागृति केन्द्र) ने भी अपने विचारों को रखा। कार्यक्रम में झारखंड के सभी जिलों से 100 स्वैच्छिक संस्थाओं की सहभागिता रही।

SWABAL Beneficiaries from Dumka

When Lalita Hansda (22) was a child of 10 years only, she became a prey of polio that paralyzed both of her legs. Her father is a small tiller of Dakri village under Dumka Sadar block and very often works as daily labourer also to feed family. In the year 2011, she was picked by NBJK to get physiotherapy under CBR program and despite challenges of poverty and physical impairment, Lalita has passed matriculation. In January 2014, she was selected under SWABAL program by NBJK with support of Axis Bank Foundation, Mumbai for skill training and livelihood support. Lalita got training on tailoring and purchased a subsidized sewing machine with help of the seed money provided to her. Now she earns around Rs. 2000 per month easily at her home. Likewise Krishnamurari Mandal (40) is a resident of village-Dangalpara of Dumka Sadar block. He was a petty coal vendor on bicycle before the accident with a truck which snatched his right leg from knee. This forced his adolescent son to be a migrant labourer as there was no other support available for the family. After association with SWABAL in January'14, Krishnamurari has been motivated to restart and he got training to prepare betel at a shop. He modified his tricycle accordingly and purchased necessary items with the seed money to run his mobile betel shop. Now he keeps other consumer items also and his daily trade is of around Rs. 350.

दुमका के स्वबल लाभार्थी

ललिता हांसदा जब सिर्फ 10 वर्षों की थी तो उसके दोनों पाँव पोलियोग्रसत हो गये। दुमका सदर प्रखंड के डाकरी गाँव में रहने वाले इसके पिता एक छोटे किसान हैं और अक्सर दैनिक मजदूरी करके अपने परिवार का भरण–पोषण करते हैं। वर्ष 2011 में ललिता को न०भा०जा० केन्द्र द्वारा संचालित समुदाय आधरित पुनर्वास कार्यक्रम से जोड़ा गया और इसे फीजियोथेरेपी सेवा मिली। गरीबी और शारीरिक अक्षमता की चुनौतियों के बावजूद ललिता ने मैट्रिक पास किया। जनवरी 2014 में इसे एक्सिस बैंक फाउंडेशन, मुंबई के सहयोग से न०भा०जा० केन्द्र द्वारा संचालित कौशल विकास और आजीविका सम्बन्धी कार्यक्रम ''स्वबल'' हेतु चुना गया। ललिता ने सिलाई–कटाई का प्रशिक्षण लिया और कार्यक्रम के तहत मिली आर्थिक मदद से इसने एक सिलाई मशीन खरीदा। अब यह अपने हुनर से घर पर ही लोगों के कपड़े सिलकर प्रति माह लगभग 2000 की आमदनी करती है। इसी तरह दुमका सदर प्रखंड में दंगलपाड़ा गाँव के कृष्णमुरारी मंडल (40) साइकिल पर घूम–घूम कर कोयला बेचने का काम करते थे। एक सड़क दुर्घटना में अपना दायाँ पैर गवाँने के बाद ये बेबस होकर घर बैठ चुके थे। परिवार की खराब आर्थिक स्थिति ने इनके किशोरवय पुत्र को प्रवासी मजदूर बना दिया। जनवरी 14 में 'स्वबल' कार्यक्रम से जुड़ाव ने कृष्णमुरारी को फिर से कुछ नया उद्यम करने की प्रेरणा दिया और इन्होंने पान लगा कर बेचने का प्रशिक्षण लिया। इन्होंने अपनी तिपहिया साइकिल में कुछ तबदीली लाकर उसे चलंत पान दुकान का रूप दे दिया। अब कृष्णमुरारी अपनी दुकान में दैनिक उपयोग की अन्य उपभोक्ता सामग्री भी रखते हैं और इनकी प्रतिदिन की बिक्री लगभग 350 रू० की है।

Vision Centre at Sherghati

A vision centre was started by NBJK run LNJP Eye Hospital (Chouparan, Hazaribag) at Sherghati, the sub divisional town under Gaya district. The centre will provide eye/sugar/BP check up, medicines, spectacles or referral services for eye care at subsidized rates to the rural population of about 1, 55,000 scattered in 1,209 villages and where only 10% villages have any health care facility. Mrs. Manju Agrawal (a local community leader) has inaugurated this vision centre and thanked NBJK for its people centric approach. On this occasion, Mr. Girija Satish (ED, NBJK) has expressed his concern over the rising trend of eye problem in villages and stressed over the need of awareness with service at small places. He appreciated the Indian people of Australia who contributed to this initiative under Vision 2020 and thought for their countrymen. It is remarkable that LNJPEH, Chouparan organizes 4 camps every month in Gaya district and a large number of people avail eye care facilities within their reach. Last year, LNJPEHs (Chouparan & Dumka) have attended more than 46000 eye patients and delivered 8039 cataract operations. We want to provide quality service at low cost for ordinary people suffering from eye problems, Mr. Gandharv Gaurav (Director, LNJPEH) said after the opening ceremony of Vision Centre at Sherghati. The centre has served more than 200 eye patients free of cost on the same day.

शेरघाटी में विजन सेंटर

न०भा०जा० केन्द्र द्वारा संचालित लोकनायक जयप्रकाश आँख अस्पताल (चौपारण, हजारीबाग) द्वारा गया जिला के अनुमंडलीय कस्बे शेरघाटी में एक विजन सेंटर/दृष्टि केन्द्र खोला गया है। यह केन्द्र शेरघाटी अनुमंडल के 1209 गाँवों में फैली 1 लाख 55 हजार की आबादी के लिए किफायती दर पर आँखों के साथ–साथ डायबिटिज, ब्लडप्रेशर की जाँच, दवा चश्मा और रेफेरल सेवा सुविधा उपलब्ध कराएगा। विदित हो कि इस अनुमंडल के सिर्फ 10% गाँवों में किसी प्रकार की चिकित्सा सेवा उपलब्ध है। विजन सेन्टर का उद्घाटन करते हुए स्थानीय नेत्री श्रीमती मंजू अग्रवाल ने न०भा०जा० केन्द्र को इसके लोकोन्मुखी नजरिये के लिए धन्यवाद दिया। इस अवसर पर संस्था अध्यक्ष श्री गिरिजा सतीश ने बढ़ती नेत्र समस्या के समाधान हेतु चेतना जागरण और छोटी जगहों पर चिकित्सा सुविधा को जरूरी बताया। इन्होंने ऑस्ट्रेलिया में रहने वाले आप्रवासी भारतीयों के प्रति आभार व्यक्त किया, जिन्होंने विजन 2020 अभियान अन्तर्गत यह केन्द्र खोलने में सहयोग दिया है। लोकनायक आँख अस्पताल द्वारा गया जिला में प्रति माह 4 नेत्र जाँच शिविरों का आयोजन कर बड़ी संख्या में जरूरतमंद नेत्र रोगियों तक स्वास्थ्य सेवा पहुँचाने का प्रयास किया जाता है। बीते वर्ष लोकनायक जयप्रकाश आँख अस्पताल (चौपारण एवं दुमका) द्वारा 46000 से अधिक नेत्र रोगियों का इलाज किया गया और 8039 मोतियाबिन्द ऑपरेशन हुए। शेरघाटी में विजन सेंटर उद्घाटन समारोह के बाद श्री गंधर्व गौरव (निदेशक, लो०ना०ज०प्र० आँख अस्पताल) ने कहा कि हम आँखों की बीमारी से परेशान सामान्य लोगों तक कम खर्च में स्तरीय सेवा पहुँचाना चाहते हैं। शेरघाटी में उस दिन 200 लोगों की आँखों का निःशुल्क इलाज किया गया।

CASE STUDY

Not Bothered Now

Balmukund Prasad (55) is a farmer at Raisa village under Chandi block of Nalanda district in Bihar. About 3 years ago, he was suffering from acute depression after death of his wife and separation in family. He lost his sleep, appetite and became afraid of talking or doing anything normally. Balmukund's younger son has consulted the local hospital, went to a homeopath and again shown him to an experienced physician who sensed for any mental problem and suggested for psychiatric treatment. In the meantime, Kasturba Gramin Vikas Parishad, a partner NGO for NBJK-BasicNeeds supported Mental Health & Development Program at Chandi has identified Balmukund as a probable recipient of the program. His son was counseled to understand the problem which needs different treatment. Balmukund was enrolled for monthly mental health camp at Patna and Dr. Jayesh Ranjan (Psychiatrist) has started his treatment. After two months of regular medication, Balmukund felt better. He could sleep and eat. Also his chronic headache and muscle pain were reduced. He is able to do agriculture works in his field and takes care of his domestic animals. Balmukund feels grateful to the doctor and KGVP people who brought a positive change in his life. Also he wants to quit the medicines but after doctor's approval only.

अब चिंता नहीं

बिहार में नालंदा जिले के चंडी प्रखंड अन्तर्गत राइसा गाँव के बालमुकुंद प्रसाद (55) एक किसान हैं। पत्नी की मृत्यु और परिवार में अलगाव के बाद इनकी मानसिक स्थिति में बदलाव आने लगा। यह दुश्चिन्ता और अवसाद से घिर गये लेकिन कभी कुछ बोलते नहीं थे। बालमुकुंद को अनिद्रा, भूख में कभी, बेवजह भय जैसे लक्षणों से परेशान देखकर इनके छोटे पुत्र ने इन्हें स्थानीय अस्पताल में दिखाया और होमियोपैथी चिकित्सा हुई। कुछ अंतर नहीं आते देखकर फिर इन्हें एक अनुभवी फीजिसियन के पास ले जाया गया, जिन्होंने इनकी मानसिक स्थिति का अनुमान लगाते हुए मनश्चिकित्सीय सलाह की जरूरत बताया। इसी बीच बेसिकनीड्स–न०भा०जा० केन्द्र समर्थित मानसिक स्वास्थ्य एवं विकास कार्यक्रम की सहयोगी संस्था कस्तूरबा ग्रामीण विकास परिषद, चंडी द्वारा बालमुकुंद की पहचान एक लाभार्थी के रूप में की गई। संस्था द्वारा इनके पुत्र को बताया गया कि मानसिक रोगों का इलाज कुछ अलग तरीके से होता है और इसके विशेषज्ञ चिकित्सक को दिखाना जरूरी है। कार्यक्रम के तहत पटना में प्रति माह लगने वाले मानसिक सवास्थ्य शिविर के लिए इन्हें निबंधित कर लिया गया और मनश्चिकित्सक डा० जयेश रंजन द्वारा इनकी सही चिकित्सा शुरू हुई। नियमित रूप से मात्र दो माह दवा खाने के बाद बालमुकुंद की स्थिति में काफी सुधार हुआ। भूख और नींद की समस्या दूर हो गई। लगातार सिर दर्द और माँसपेशियों में जकड़न से मुक्ति मिली। इन्होंने अब खेती और पशुपालन का अपना पुराना काम फिर शुरू कर दिया है। बालमुकुंद कस्तूरबा ग्रा० वि० परिषद के कार्यकर्ता और डा० जयेश के प्रति आभार प्रकट करते हैं कि इनकी वजह से वो स्वस्थ हैं। अब ये दवाई खाना छोड़ना चाहते हैं लेकिन डॉक्टर से पूछ कर ही ऐसा करेंगे।

परिकल्पना : **श्री गिरिजा सतीश**
प्रस्तुति : **विनय भट्ट**
नव भारत जागृति केन्द्र, संयोजन कार्यालय,
ग्राम – अमृतनगर, पो. कोर्रा,
जिला हजारीबाग (झारखण्ड) द्वार प्रकाशित
दूरभाषः 06546 – 263332, +91 9835751159
ई मेलः nbjkco@gmail.com; vinaynbjk@gmail.com

To,

KALRA 98357 11566

For Private Circulation Only